

इस मांग पर केंद्रीय सरकार विचार कर रही है। नव्य प्रवेक जैसी पिछड़ी स्टेट में, बिस्स की प्राथिक स्थिति बरबाद है, उत्तर प्रदेश, राजस्थान और झारखण्ड से जो वहाँ के कर्मचारियों का बेतन कम है, ऐसे पिछड़े राज्यों के कर्मचारियों के बारे में राज्य सरकार द्वारा की गई मांग पर क्या आप सम्मोहता से विचार करेंगे ?

**SHERI S. D. PATIL:** It is an omnibus question. It is rather difficult unless there are discussions about the difference in the pay scales of the State Government employees and others. As far as the financial capacity of each State is concerned, they have to decide according to the financial resources and it has already been answered by my senior colleague.

#### Issue of licences for tin cans

\*1138 **SHRI ISHWAR CHAUDHRY:** Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) whether Government have restricted issuing of licences to the Small Scale Industries for the manufacture of tin cans; and

(b) if so, the reasons therefor and the time by which this restriction is likely to be removed?

**THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI GEORGE FERNANDES)** (a) and (b). No industrial licence is required for setting up an industrial unit in the small scale sector. Any small scale unit has to register itself with the State Director of Industries. The only restriction at present imposed on the setting up of small scale units for the manufacture of tin cans is that they should be established in backward areas only. Such a restriction has been imposed due to the inadequate availability of raw materials and poor capacity utilisation. The question of removing the above restriction can be considered after the capacity utilisation of the existing units attains an optimum level.

**श्री ईश्वर चौधरी :** अध्यक्ष जी, मैं मंत्री जी का आभार है कि उन्होंने लघु उद्योग क्षेत्र को काफी प्रोत्साहित किया है और इन की नीयत से भी स्पष्ट

हो जाता है। वहाँ उद्योगों और छोटे उद्योगों को व्यापक लाभ मिलाना चाहते हैं, परन्तु एक ही कदम है कि प्राथिक क्षेत्रों में जहाँ पिछड़ापन है वहाँ स्थापित किये जायें। तो क्या इस बात की उन्हें जानकारी है कि वहाँ उद्योग-पतियों ने, जैसे टाटा ने, डिब्बे बनाने वाली डिप भी, उस की भी बाड़ी है वह काफी संख्या में स्थापित किया है, कल के मजदूरों में आया है कि जहाँ 1300 रुपये टन था वहाँ उस की कीमत 2900 रुपये टन हो गई है। ऐसी परिस्थितियों में बिल की योजनापत्ती है, जो बड़े बड़े उद्योगकर्ताओं के पास बन है, वह सब रिजर्व कर लेते हैं, और जो छोटे उद्योग प्राणीय क्षेत्रों में अभी विद्यमान हैं, वह इधर उधर मार खा रहे हैं और वह बड़े बड़े रेट पर माल लेते हैं। क्या मंत्री महोदय उन छोटे लघु उद्योगों को संरक्षण देने के लिये कम रेट पर माल उपलब्ध कराने के लिये कोई विचार कर रहे हैं, क्या उन की कोई ऐसी योजना है ?

**श्री जार्ज फर्नांडीस :** छोटे उद्योगों को जो कच्चे माल की आवश्यकता है उस के बारे में जो समस्याएँ आती हैं, उनको दूर करने के लिये हर राज्य के राज्य औद्योगिक निगम को कहा गया है कि वह इन छोटे उद्योगों की आवश्यकताओं की पूर्ति करने की दिशा में कच्चा माल बनाने वाले लोगों के साथ सीधा सम्पर्क करें और इस काम में हम उन की मदद भी कर रहे हैं।

**श्री ईश्वर चौधरी :** मंत्र राज्य के बारे में तो मैं विस्तार से नहीं बता सकता हूँ, किन्तु बिहार स्टेट निगम की स्थिति यह है कि छोटे उद्योग स्थापित करने वाले व्यक्ति या जो छोटे उद्योग चला रहे हैं, वह काफी सीधे छप करने के बाद भी उन्हें अपनी और छात्रुट नही कर पाते हैं। जो बड़े उद्योग वाले हैं वह आसानी से उन्हें छात्रुट करना चाहते हैं और कर लेते हैं। इस दरम्यान में मंत्री जी की इच्छा अवश्य है कि छोटे उद्योगकर्ताओं को पर्याप्त मात्रा में कच्चा माल दें परन्तु उन की फाइनेन्सियल पोजीशन की ओर भी उन की ध्यान देना चाहिये। मैं जानना चाहता हूँ कि क्या बैंकों को इस तरह की इच्छाओं की दी गई है कि उन छोटे उद्योगों को भी फाइनेन्स मुहैया करे ?

**श्री जार्ज फर्नांडीस :** बैंकों को इस प्रकार के निर्देश दिये हैं और जो समस्याएँ लोगों की थी, उनको दूर करने की दिशा में हम काफी सफल हो गये हैं।

**श्री इश्वर चौधरी :** मंत्री जी मैं इस बात की स्वीकार किया है कि कच्चे माल की काफी कमी है, उस से कुछ कठिनाइयाँ हैं। मैं जानना चाहता हूँ कि देश में कितना माल उपलब्ध है, बिचकों से कितना माल जाता है और कितनी कमी है ? क्या वह बात स्पष्ट है कि जो माल देश में बनता है, अक्सर बिचकों में स्तूप काम में जाता है, उस माल की उद्योगपति जैसी दायों पर नीलाम करती हैं और जो माल वह खरीवती है, उस की ओर भी उन्हें दायों पर बेचते हैं जिस के कारण देश का लघु उद्योग संकट में है। बिचकों से जो माल जाता है, उसको भी बड़े लोग लेते हैं और मनमाने ढंग से उस की

बेचते हैं। क्या उस की क्षतिपूर्ति के लिये बाप कोई नई व्यवस्था कर रहे हैं। हाकिमों को पर्याप्त मात्रा में माल मिल सके ?

श्री जार्ज फर्नान्डो : उन विद्या में हम कई कदम उठा चुके हैं और जो परेशानी इस समय महसूस कर रहे हैं उस को दूर करने की कोशिश कर रहे हैं।

श्री हुकम चन्द कछवाल : मेरे क्वेश्चन का उत्तर नहीं आया है ?

अध्यक्ष महोदय : क्वेश्चन सच्चा है और आन्सर छोटा है।

श्री राम बेब सिंह : मैं सरकार से जानना चाहता हूँ कि राज्य सरकारों में जो स्माल इंडस्ट्रीज डिपार्टमेंट है, उस राज्य में लघु उद्योगों के लिये जो कच्चे माल की प्रावश्यकता है, उस की पूर्ति क्या वह कर सकेंगे ? स्टेट में जितनी प्रावश्यकता है, क्या उस की सप्लाई कर सकेंगे ?

श्री जार्ज फर्नान्डो : यही हम लोगों ने राज्य औद्योगिक निगम को निर्देश दिया है। जो हमारी तरफ से मदद उन को इस मामले में मिलनी चाहिये, वह हम बे रहे हैं।

श्री चन्द्र शेखर सिंह : मैं जानना चाहता हूँ कि क्या भारत सरकार की यह नीति है कि हथकरघा उद्योग और लघु उद्योग को ज्यादा से ज्यादा प्रोत्साहन दिया जाये ? (व्यवधान)

MR SPEAKER It is about tin can.

श्री चन्द्र शेखर सिंह : हथकरघा भी उस से जुड़ा हुआ है। कई बड़ी कारनिया इन टीनों को बनाती हैं और जो प्रायः वे बनाने वाले हैं उनके द्वारा यह टीन वहा बन सके

MR SPEAKER: It does not arise.

श्री चन्द्र शेखर सिंह : मेरा प्रश्न इसी से सम्बन्धित है।

टाटा बगीरह भी टीन बनाते हैं और बड़ी मशीनों के इस्तेमाल के बिना हाथ से भी टीन बनाने का काम होता है। तो क्या भारत सरकार या मंत्री मशिनो के प्रयोग को प्रोत्साहित करेंगे कि कई चीजें हाथ से, या बिना विशेष मशीनों के इस्तेमाल के, बन सकती हैं, उन का उत्पादन बड़ी मशीनों के क्षेत्र से हटा कर हस्त उद्योग के क्षेत्र में किया जाये ?

श्री जार्ज फर्नान्डो : इस समय देश में इस उद्योग का अर्थिक उन्पादन छोटे क्षेत्र में ही है। कुल मिला कर 1150 छोटे कारखाने हैं, जिन की कैपेसिटी चार लाख टन है। बड़े कारखाने कुल मिला कर 38 हैं और उनकी कैपेसिटी लगभग 1 लाख टन है। इस समय ज्यादा उत्पादन छोटे क्षेत्र में हो रहा है। मशीनों के क्षेत्र में हटा कर उस का उत्पादन हाथों से हो पायेगा, जैसा कि भारतीय सभ्यता चाहते हैं, वैसा भूमे नहीं लगता है।

### Setting up of Cement Factory at Jainti Alipurduar W. B.)

\*1139. SHRI PIUS TIRKEY: Will the Minister of INDUSTRY be pleased to state:

(a) whether a cement factory is proposed to be installed at Jainti Alipurduar, district Jalpaiguri (West Bengal);

(b) if so, how much money has been allotted for it; and

(c) if not, what are the reasons?

THE MINISTER OF INDUSTRY (SHRI GEORGE FERNANDES): (a): No, Sir.

(b) Does not arise.

(c) No limestone deposits adequate to support a cement factory have been located at Jainti Alipurduar District Jalpaiguri (West Bengal).

श्री पीयूष तिरकी : मैं मंत्री महोदय से यह पूछना चाहता हूँ कि क्या जयन्ती प्रलीपुरद्वार हमारे देश में है या गुटान में है। पता नहीं, उन को यह रिपोर्ट कहाँ से मिली है। मैं यह जानना चाहता हूँ कि क्या पश्चिमी बंगाल सरकार से इस सम्बन्ध में कोई रिपोर्ट उन के पास आई है या नहीं, अगर आई है, तो वह रिपोर्ट क्या है ?

श्री जार्ज फर्नान्डो : यह बंगाल जयन्ती प्रलीपुरद्वार जिला जलपाईगुडी, पश्चिमी बंगाल में सीमेंट का छोटा कारखाना खड़ा करने के बारे में है। उस क्षेत्र में लाइम स्टोन का डिपॉजिट नहीं है, इसलिये वहाँ पर किसी प्रकार का सीमेंट का कारखाना लगाने का सवाल नहीं उठता है।

श्री पीयूष तिरकी : पश्चिम बंगाल की सरकार का कहना है कि वहा पर लाइमस्टोन का भंडार है। अग्रेजों के समय से उस का पता है। वहा पर डालोमाइट का पहाड़ है जहाँ से डालोमाइट भिलाई और हुगलिपुर ले जाया जा रहा है। मंत्री महोदय को यह सूचना कहाँ से मिली है ? वेस्ट बंगाल गवर्नमेंट ने क्या लिख कर भेजा है ?

श्री जार्ज फर्नान्डो : पश्चिमी बंगाल सरकार से हमारे पास इस बारे में किसी प्रकार की कोई सूचना नहीं मिली है।

SHRI CHITTA BASU: Sir, in reply the hon. Minister said that no limestone deposits adequate to support a cement factory have been located at Jalpaiguri. It means there are